पहाड़ों की अद्भुत छटा

पेन्सिल्वैनिया का पाइन क्रीक दर्रा

आलेख: **एरिका ली नेल्सन** फोटोग्राफ: **सेबास्तियन जॉन**

लपटों के रंग के पतझड़ और पंचरंगे पहाड़ों की झलक पाने की लालसा हमें पेन्सिल्वैनिया के पाइन क्रीक दर्रे तक ले गई लेकिन हमें यहां वापस लाएगा इस क्षेत्र के खांटी, ग्रामीण अमेरिकी लोगों का आकर्षण। शॉपिंग मॉल और चार लेन वाले फ्रीवे से कोसों दूर पाइन क्रीक दर्रे में आपका स्वागत है। यह उत्तर-पूर्व के बियाबान इलाके से गुजरता 64 किलोमीटर लंबा प्राकृतिक खड्ड है जिसकी अधिकतम गहराई 442 मीटर है। इसे पेन्सिल्वैनिया का ग्रैंड कैन्यॅन कहा जाता है। यह एरिज़ोना के ग्रैंड कैन्यॅन जैसी विशालता लिए तो नहीं है लेकिन यह भी है विशाल।

अक्टूबर की शुरुआत में ड्राइव करते जाएं तो राह के हर मोड़ पर हैरतअंगेज नज़ारे दिखते हैं। दो लेन के ऊबड़-खाबड़ रास्ते में बैंगनी, लाल, पीले, गुलाबी, संतरी, भूरे और हरे पेड़ों से ढकी पहाड़ियों के बीच से जाते हुए मेरे पति ने कहा, ''यह तो अजूबा है।''

दर्रे के आसपास के क्षेत्र की आबादी बहुत कम है, ज़्यादातर क्षेत्र का विकास भी नहीं ही हुआ है। पार्क और जंगल करीब 4 लाख वर्ग हैक्टेयर में फैले हैं। दर्रा करीब 35 करोड़ साल पहले बनना शुरू हुआ था, इसकी चट्टानें अपना ही रंग लिए है। सैंडस्टोन, सिल्टस्टोन, मडस्टोन और शेल चट्टानें हरे, सलेटी, भूरे और लाल रंग की नज़र आती हैं। पूरे पार्क में जहां-तहां बहते झरने भी दिखते हैं!

बिल्कुल ऊपर बाएं: पाइन क्रीक दर्रे का ऊपर से लिया गया चित्र। ऊपर: पाइन क्रीक दर्रे के निकट अन्सोनिया में एक मोटल और पुरानी शैली का फोन बूथ। ऊपर बाएं: गेत्ज़विल, न्यू यॉर्क की पर्यटक डोना डैनियल्स कार्टर कैम्प लॉज में बकरियों को दुलारते हुए। ऊपर दाएं: कार्टर कैम्प में बेड एंड ब्रेकफ़ास्ट सेवा संचालित करने वाली बारबरा एंड्रूज़ कार्टर कैम्प के पास सड़क पार करते हुए।

डैंटन हिल स्टेट पार्क में पतझड़ का एक दृश्य।

यहां आने का बढ़िया समय: पत्तों, पेड़ों, जंगलों के बदलते रंग देखने उत्तरी पेन्सिल्वैनिया आ रहे हैं तो साधारण रूप से अक्टूबर का पहला हफ़्ता बढ़िया रहेगा। (www.fallinpa.com) पत्तों की रंगत ठंडक से बदलती है, इसलिए आने से पहले यहां के मौसम के बारे में जानकारी ज़रूर ले लें। गर्मियों के मौसम में यहां तैराकी और व्हाइट वाटर रैफ्टिंग का ज़ोर रहता है तो जाड़ों में स्नो-मोबाइल पर सैर और स्कीइंग का।

कहां ठहरें: प्रकृति की गोद में रहने के अनुभव के लिए बीहड़ वीराने में तम्बू में रहने के लिए अप्रैल से अक्टूबर तक 17.50 डॉलर प्रति रात्रि और जाकुज़ी और स्पा सहित शाही अंदाज का सत्कार चाहें तो करीब 150 डॉलर प्रति रात्रि की राशि चुकाने को तैयार रहें। पतझड़ के दिनों में कार्टर कैम्प में 85 डॉलर प्रति रात्रि देने होंगे।

कैसे पहुंचें: यहां घूमने के लिए अपनी कार साथ लाएं और रंग बदलते जंगलों की पूरी छटा देखनी है तो छोटी सड़कों पर भी उतरने को तैयार रहें। तीन करीबी शहरों हैरिसबर्ग, पेन्सिल्वैनिया, बफैलो, न्यू यॉर्क और स्क्रैंटन, पेन्सिल्वैनिया से करीब तीन घंटे ड्राइव करके दर्रे तक पहुंचा जा सकता है।

खुशनुमा रास्ते

हमारा पहला पड़ाव लिट्ल पाइन स्टेट पार्क रहा जहां से हमने दर्रे के पेटे से दुनिया देखी। इस क्षेत्र को तराशने वाली नीली खाड़ी के किनारे चलते हमने पाया कि पिकनिक पर आए कई परिवार नावें चलाते, पैदल चलते छुट्टी का आनन्द उठा रहे थे। इतनी गतिविधियों के बावजूद शोरशराबे का नाम नहीं था। बस कभी किसी इंजन की घरघराहट या चप्पुओं के चलने की आवाजें और बाजों का शोरशराबा ही याद दिलाता कि हम मनुष्यों की सभ्यता के आसपास ही हैं। आकाश में बाज उड़ रहे थे। अमेरिका का राष्ट्रीय पक्षी बाल्ड ईगल भी बीच-बीच में दिख जाता।

दर्रे के किनारे-किनारे, एक पुराने रेलमार्ग के साथ-साथ चलता चला गया 92 किलोमीटर लम्बा खूबसूरत पाइन क्रीक रेल रास्ता पैदल और साइकिल पर घूमने के लिए बढ़िया रास्ता है। इस पर घूमने के लिए आपको बहुत ज़्यादा चुस्त होने की भी ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह पूरा ही समतल है। कहीं भी उतार-चढ़ाव दो डिग्री से ज़्यादा नहीं है जो पुराने रेल इंजनों के लिए अधिकतम होता था। वरिष्ठ नागरिक पतझड़ की शोभा निहारते, साइकिलें चलाते घूम रहे थे। साइकिल चला रहे एक वृद्ध साहब ने बताया, ''हम तो हर बरस सप्ताहान्त के तीन दिन यहीं बिताते हैं।'' यहां आने में एक बड़ी सुविधा यह है कि आपको सब सामान लाद कर नहीं लाना पड़ता- मार्ग के किनारे कई जगह छोटे स्टोर और होटल हैं!

हम दर्रे में चल रहे हैं, दर्रे के किनारे दिखते आकाश में बाज हवा में तैर रहे हैं। उनकी निगाह से दुनिया देखने की चाह में हम कोई कम ढलान वाला रास्ता ढूंढते हैं जो हमें खड्ड के ऊपरी छोर तक ले जा सके। ऊपर पहुंचे तो पता चला यहां बहुत अच्छे ढंग से बनी, छोटी-छोटी पगडंडियों पर चलते दूर तक लहराते-बल खाते खड्ड का सुदंर नज़ारा दिखता है।

पतझड़ की रौनक देखने का एक और आसान तरीका है स्की लिफ़्ट से पहाड़ियों को देखना। डेंटॅन हिल स्टेट पार्क में स्कीइंग के लिए मुफीद कुछ बेहतरीन ढलानें हैं जिन पर पतझड़ और गर्मियों में साइकलिंग के शौकीन साइकिलों पर सैर करते हैं। इस तरह स्कीयर्स और साइकिल सवार मिलकर इन स्की लिफ़्टों का पूरा-पूरा फायदा उठाते हैं। धीरे-धीरे ऊपर की ओर जाती स्की लिफ़्ट से जंगल के अनूठे नज़ारे दिखते हैं। एक बार ऊपर पहुंचने पर आप वहां पैदल घूम सकते हैं, लिफ़्ट से नीचे आ सकते हैं या फिर पहाड़ों पर अपनी साइकिल को दौड़ा सकते हैं जो किराए पर भी मिलती हैं।

बीसवीं सदी की शुरुआत में पूरे कैन्यॅन क्षेत्र में जंगल की कटाई का काम जोरशोर से चलता था। कटे लट्ठे पाइन क्रीक में बहते पास के विलियम्सपोर्ट कस्बे के आराखानों तक पहुंचते थे। स्की ढलान के ऐन सामने एक संग्रहालय है जो जंगलों की कटाई के उस बीते दौर की यादों को जिंदा रखे है। जंगल में गहरे जाने पर लकड़हारों के वीरान पड़े कस्बे आज भी दिख जाते हैं।

जगमग आकाश

महाखड्ड के अलावा यहां का एक और प्राकृतिक आकर्षण है जिसे आप सिर्फ रात्रि के समय देख सकते हैं। हम रात के आठ बजे चेरी स्प्रिंग्स स्टेट पार्क पहुंचे जो साफ आसमान पर छिटके तारों को देखने के लिए अमेरिका भर में सबसे शानदार जगह है। चेरी स्प्रिंग्स पूरे अमेरिका में तारों को देखने के लिए सबसे बढ़िया जगह है। इतने दूरदराज होने के चलते यहां मानव सभ्यता का प्रकाश प्रदूषण नहीं के बराबर है। पार्क में लगी सभी बत्तियां ढकी हुई हैं। आकाश दर्शन के लिए पेड़ काट कर एक बड़ा सा मैदान तैयार किया गया है जहां से किसी साफ सुथरी रात में 3,000 से ज़्यादा तारे और पांच-छह उल्काएं देखी जा सकती हैं। गर्मियों में खगोलज्ञ या तारे देखने के शौकीन इस मैदान में तम्बू लगाकर रह सकते हैं या चारों ओर घूम पाने वाली विशेष दूरबीनों वाली ऑब्जर्वेटरियों से तारे देख सकते हैं।

हम जिस रात वहां पहुंचे, उस दिन दुर्भाग्यवश लगभग पूरा चांद चमक रहा था जिससे तारे फीके से लग रहे थे। लेकिन पार्क के प्रबन्धकों ने चांद की झलक दिखाने की खास तैयारी कर ली थी और विशाल दूरबीनों को सीधे चांद की ओर केंद्रित किया गया था। पार्क के एक रेंजर ने चांद के बारे में काफी जानकारियां दीं। चांद की सतह का हर टीला और हर गड्ढा एकदम साफ दिख रहा था। मेरा मन हो रहा था कि आसमान देखते पूरी रात बिता दी जाए, लेकिन उतनी ऊंचाई पर रात को बहुत ठंड हो जाती है। आखिर हमें लौटना पड़ा...।

नीचे: डेंटन हिल स्टेट पार्क में साइकिल सवार। बिल्कुल नीचे: कार्टर कैम्प लॉज में एक कैफ़े।

देहाती मेहमाननवाजी

हम कार्टर कैम्प नाम के कस्बे में ठहरे थे जहां की जनसंख्या है -दो। इस इलाके के पुराने बाशिन्दे जॉन और बारबरा एंड्रूज़ अपनी 150 बरस पुरानी सराय में अपने दो कुत्तों, दो बत्तखों और छह बकरियों के साथ रहते हैं और अपने यहां ठहरने वाले मेहमानों की बढ़िया खातिरदारी करते हैं।

हम अपना सामान कमरों में रख रहे थे कि जॉन ने बताया,'' यहां दरवाजों पर ताले नहीं हैं। एक बार मैंने ताले लगाए भी लेकिन हमारे पहले आने वालों को यह पसंद नहीं आया''। वह बताते हैं कि यहां लोग बहुत भले और ईमानदार हैं। बाद में मुझे पता चला कि यह बात एकदम सच है।

वैसे तो इस इलाके में कुछ महंगे होटल भी हैं लेकिन कार्टर कैम्प लॉज एकदम असली देहाती सराय है। यहां आठ कमरें हैं, एक साझा गुसलखाना, और घर गर्म रखने के लिए लोहे की एक भट्टी। सुबह आठ बजे रसोई में या बैठकखाने में नाश्ता मिलता है। मसालेदार, चटपटी सॉसेज से लेकर नर्म ब्रेड तक, सभी कुछ जॉन और बारबरा खुद पकाते हैं।

इस इलाके में दुकानें जल्दी बन्द हो जाती हैं, इसलिए रात का खाना खाने में जरा मशक्कत का काम हो जाता है। एक रात हम यहां के कुछ बड़े कस्बे गेलटन (जनसंख्या 1,325) में रात का खाना खाने गए। हड़बड़ी में मेरा पर्स कार की छत पर रखा रह गया और हम रेस्तरां से करीब आधा मील दूर निकल आए। अपनी गलती समझ में आई तो कार रेस्तरां की ओर मोड़ी।

और अब अमेरिकी देहात का मेहमाननवाजी का नमूना देखने को मिला- एक खानसामा फ़्लैशलाइट लाने के लिए अपने घर दौड़ा, एक साहब अपने ट्रक में से बड़ी टॉर्च निकाल लाए और एक ग्राहक मेरा पर्स ढूंढने में मदद करने हमारे साथ चल दिया। काफी खोजबीन के बाद गाड़ियों के पहियों के नीचे आकर पिचक चुका पर्स मिला लेकिन पैसे सही सलामत थे। हम रेस्तरां में लौटे तो सभी लोग खुशी से तालियां बजाने लगे।

यह दुनिया बहुत छोटी है

इतवार की सुबह कार्टर कैम्प में नाश्ते पर काफी लोग थे। कॉफ़ी पीते, कुट्टू के पैनकेक खाते हम पर्यटकों और स्थानीय लोगों से मिलजुल रहे थे। अक्सर यहां आने वाले लोग अपने जूठे बर्तन खुद ही सिंक में धोने के लिए रख रहे थे। हमारी मेज पर पास के एक कस्बे से जंगली टर्कियों का शिकार करने आए शिकारी जिम स्पॉट्स और मेल्विन वेनमॉन भी बैठे थे। उन्होंने बताया कि इन पहाड़ियों में हिरण, जंगली मुर्गाबी, गिलहरियां, लोमड़ियां, कायोटे, बनबिलावों और यहां तक कि भालुओं की भी भरमार है। बातों-बातों में भारत की बात चली तो स्पॉट्स ने बताया कि यहां डॉक्टर गुजराती हैं, ''उसने मुझे कुछ-कुछ बातें कहनी सिखाई हैं- मजामा।'' हम दोनों हैरान रह गए- दुनिया कितनी छोटी है।

जब हम घूमने निकलने की तैयारी कर रहे थे तो उन्होंने हमें अपने घरों में लंच का न्यौता दिया, अपने फोन नम्बर भी दिए ताकि किसी झंझट में हम उनसे मदद ले सकें, और हर जगह पहुंचने के बढ़िया रास्ते भी बताएं।

लौटते हुए हमने जंगल पर हसरतभरी निगाह दौड़ाई तो मेरे पति जॉन ने आह भरी, ''यह मेरे बचपन की देखी बॉलीवुड फिल्मों जैसा नज़ारा है। मैं सोच नहीं सकता था कि जंगल सचमुच ऐसे लगते होंगे।''

कभी-कभी गलत साबित होना बहुत अच्छा लगता है!

__एरिका ली नेल्सन__ वाशिंगटन, डी.सी. में रहती हैं। उनका विवाह नई दिल्ली में भारतीय फोटोग्राफर सेबास्तियन जॉन से हुआ।

पतझड़ की छटाएं

अमेरिका में पतझड़ में जंगलों-पेड़ों के बदलते रंगों की छटा देखने के लिए घूमने जाने वालों के लिए कुछ ऐसी जगहें जो परंपरागत से हटकर हैं लेकिन देखने लायक हैं।
http://gorp.away.com/gorp/features/fall/fall.htm
http://www.fs.fed.us/news/fallcolors/

वर्मॉंट का ग्रीन माउंटेंस इलाका पतझड़ में जंगलों-पेड़ों के बदलते रंगों की छटा देखने के लिए सबसे लोकप्रिय जगह है लेकिन न्यू यॉर्क सिटी से कुल घंटे भर की दूरी पर स्थित **डेलावेयर वाटर गैप नेशनल रिक्रिएशनल एरिया** में तीन ऐसी जगहें हैं जहां से पतझड़ी रंगों में धधकते जंगलों से अटी पहाड़ियों का स्तब्धकारी दृश्य दिखता है। अक्टूबर के मध्य में जंगल का यह आकर्षण अपने चरम पर होता है जब चिनार, बलूत, हिकरी और डॉगवुड के हरे पत्ते बैंगनी, लाल, पीले, भूरे, संतरी रंगों में नहा उठते हैं।
http://www.nps.gov/dewa/planyourvisit/fall-foliage.htm

सिस्सेटन से कुल 24 किलोमीटर दूर साउथ डकोटा का **सिका हॉलो स्टेट पार्क** रंग बदलते चिनारों, लिंडेन, ऐश और बलूतों का भव्य दृश्य प्रस्तुत करता है। इस परिघटना का पूरा आनन्द सिका हॉलो जंगलों के बीच से गुजरती ट्रेल ऑफ़ स्पिरिट्स पर पैदल या घुड़सवारी करते लिया जाए तो आप इस हॉलो को रचने वाली प्राकृतिक शक्तियों और पार्क से जुड़ी अमेरिकन इंडियन दंतकथाओं के बारे में जान सकते हैं।
http://www.sdgfp.info/parks/Regions/GlacialLakes/SicaHollow.htm

ऑरेगॉन का पतझड़ न्यू इंग्लैंड के पतझड़ जैसा विख्यात भले ही न हो लेकिन उत्तरी ऑरेगॉन का **ऑफडरहीड मेमोरियल ड्राइव** परिवार के साथ पिकनिक का आनंद लेते प्रकृति के बदलते रंग देखने के लिए बढ़िया जगह है। विलामेट नेशनल फॉरेस्ट का यह हिस्सा साइकिल पर सैर करने वालों के बीच बहुत लोकप्रिय होने के साथ ही एक नेशनल सीनिक बायवे भी है। सड़क घने जंगल के बीच से गुजरती है, इसलिए आप कई जगह अद्भुत सुंदर दृश्य देख पाएंगे।
http://gorp.away.com/gorp/activity/byway/or_aufde.htm

एक बार ग्रेट स्मोकी माउंटेन्स नेशनल पार्क जाने का मोह छोड़कर जरा नॉर्थ कैरॉलाइना के **नान्ताहाला नेशनल फ़ॉरेस्ट** निकल जाइए। यहां की पतझड़ी भव्यता की पूरी शोभा देखनी है तो तीन किलोमीटर लंबी लूप ट्रेल पकड़िए, यह इतना सरल रास्ता है कि आप बच्चों को भी इस पैदल सैर पर ले जा सकते हैं। पहाड़ियों से गिरते झरने और पारदर्शी नदियां आकाश को छूते बलूत, हेमलॉक, चेस्टनट और पोपलर के महावृक्षों के जंगल के सौन्दर्य में चार चांद लगा देती हैं।
http:/www.cs.unca.edu/nfsnc/press/fall.htm

-युगेश माथुर